



गुरदेव सहि खुश द्वारा वकिसति धान की कसिमें



# गुरदेव सिंह खुश

## द राइस मैन ऑफ इंडिया

### खुश द्वारा विकसित धान की चमत्कारी किस्में

#### IR36

- वर्ष 1976 में प्रस्तुत,
- 1980 के दशक के दौरान इस प्रजाति को विश्वभर में सालाना लगभग 11 मिलियन हेक्टेयर क्षेत्र में लगाया गया जो कि इतिहास में किसी भी खाद्य फसल के आवरण वाला उच्चतम क्षेत्र है।
- 110-115 दिनों की परिपक्वता अवधि के साथ यह प्रजाति प्रति हेक्टेयर 9-10 टन अनाज पैदा कर सकती है जबकि पारंपरिक प्रजातियाँ 160-180 दिनों में प्रति हेक्टेयर 1-3 टन अनाज उत्पादित करती हैं। निम्न परिपक्वता अवधि के साथ उच्च पैदावार किसानों को साल भर में चावल की दो फसलें उगाने में सक्षम बनाती है।
- यह धान की पहली किस्म थी जिसे कीटों और बीमारियों के व्यापक समूह के खिलाफ प्रतिरोध प्रदान करने हेतु छह देशों की 14 देशी प्रजातियों और एक जंगली की प्रजाति के जीनों को शामिल करके विकसित किया गया था।

#### IR64

- इसे वर्ष 1985 में प्रस्तुत किया गया और 1990 के दशक के अंत में 10 मिलियन हेक्टेयर से अधिक क्षेत्रफल में लगाया गया।
- IR36 की तुलना में कीटों तथा रोगों के खिलाफ अधिक प्रतिरोधकता साथ ही उच्च पैदावार। इसे आठ देशों की धान प्रजातियों के 20 जीनों को शामिल कर विकसित किया गया।
- बनावट और स्वादिष्टता के मामले में अनाज की गुणवत्ता में अधिक सुधार के साथ ही राइस मिलिंग रिकवरी भी उच्च।



अंतर्राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान (IRRI) में खुश की टीम ने 328 लाइनों पर काम किया और 1967 से 2002 के बीच 75 देशों में 643 किस्मों को प्रस्तुत किया। वर्ष 2002 में विश्वभर में चावल/धान क्षेत्र के लगभग 60% हिस्से में IRRI द्वारा विकसित धान की किस्मों को लगाया गया था, जिसके परिणामस्वरूप चावल के उत्पादन में 2.3 गुना से अधिक वृद्धि हुई।



[और पढ़ें...](#)

PDF Reference URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/khush-rice-varities>

